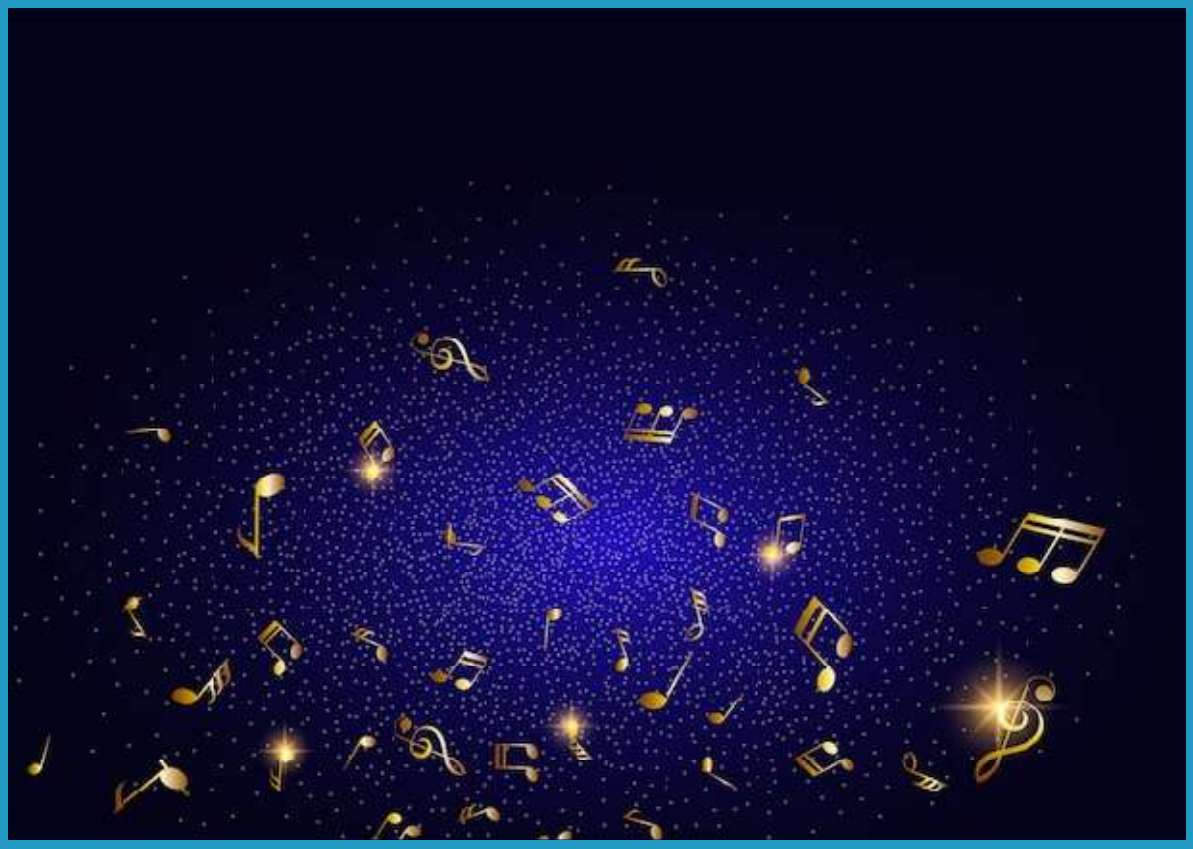

BIMA TARANA

1. बीएमएमए दुआ / प्रार्थना

शुरू करते हैं अल्लाह के नाम से जो बड़ा रहम वाला है, करम करने वाला है, बराबरी और इन्साफ करने वाला है
हिंदुस्तान हमारा आशियाना है. इस मैं रहनेवाले सभी लोगों की जिंदगी में अमन, खुशहाली और तरक्की कायम रहे।
: आमीन !

हिंदुस्तान की आजादी की लड़ाई में शामिल हमारे रहनुमाओं ने ख्वाब देखा था कि इस मुल्क में बाराबरी, आजादी और जम्हूरियत कायम रहे। ऐ खुदा हमें तौफीक दे कि हम उनके ख्वाबों को पूरा कर सकें।
: आमीन !

या खुदा ऐसा समाज तयार कर जिस्मे जात, मज़हब और फ़िरक़ों के नाम पर तस्सुब ना हो और मजहब के नाम पर बेगुनाह का क़त्ल न हो।
: आमीन !

इंसान के दिलों में जल रही नफ़रत की आग बुझा दे।
: आमीन !

हर मर्द/औरत, खास कर मुसलमान मर्द और औरत तालीम हासिल करे और आला मुकाम तक पहुंच सके, इस कौम की गरीबी मिट सके,
: आमीन!

हर औरत और मर्द को रोज़गार मिले, ख़ास कर मुसलमान औरत और मर्द को रोज़गार मिले और वो अपनी क़ौम और मुल्क को तरक्की की राह पर ले जाये,
: आमीन!
हर मर्द को, खास कर मुसलमान मर्द को ये तौफीक अता फरमा की वो हर औरत की इज्जत करे क्योंकि खुदा सब बंदों को बराबर मानता है हर

मर्द को ये तौफीक अता फरमा की वो कुरान में लिखी बातों पर सिर्फ जिरह करने के बजाये अमल में भी लाये और दूसरों को भी लाने दे,

: आमीन!

हर औरत, खास कर मुसलमान औरत में हिम्मत अता कर की वो ज़ुल्म के ख़िलाफ़ आवाज़ उठा सके,

: आमीन!

हर इंसान के दिल में प्यार, रहम और खिदामत का जज़्बा अदा कर।

: आमीन !

या अल्लाह एक ऐसा समाज तयार कर जिस में हर औरत खुल कर सांस ले सके और अपने ख्वाबों को पूरा कर सके,

: आमीन!

हर मर्द और औरत और खास कर मुसलमान मर्द और औरत में वो जज़्बा अदा कर की वो क्या ग़रीब क़ौम की तरक्की के लिए एक जट होकर सरकार से अपना हक माँगने की जोड़ी बनाएं,

: आमीन!

या खुदा हमारी सरकारों को ये तौफीक अता फरमा है कि जो आम इंसानों के लिए उनकी जिम्मेदारी है उसे वो पूरा करें ताकि देश में कोई भूखा न सो सके

: आमीन!

या अल्लाह, सब लोगों को ये तौफीक अता फरमा कि मुसलमान समाज की तरह दूसरे समाजों में भी जो दबे, कुचले, पिछड़े, गरीब मर्द और औरत और बच्चे हैं उनका हक उनको मिले और हम सभी मिलजुल कर सब के लिए संघर्ष करें,

: आमीन!

2 : तेरे अहसन की छाँव में

तेरे अहसन की छाँव में रहूँ इंसान बन कर मैं
मेरी बस ये दुआ है [2]
तेरा शुक्रान हम पर हो के तू आला और अफजल है
मेरी औकात क्या है [2]

दिलकश तेरी सारी खुदाई
दिलों में मोहब्बत और अच्छाई
हिदायतवाली सही रहनुमाई

जले इन्साफ की शम्मा, रहम दिल हो हर एक इंसान
ख़ुदा ये चाहता है [2]
ज़रुरत मंद गरीबों को मदद कर दो यतीमों को
नवाजे का कहा है
तेरे अहसन की _____
इबादत हमारी बिना नेकियों के
रवइया हमारा बिना रहमतों के
मसावत के बिन खुदा के ना होंगे
लिखा कुरान में देखो, जिक्र अहसन के बारे में
यही पैगाम मिला है

तेरे अहसन की छाँव में --------

(लेखिका : जरीना खान)

3: क़िवामाः

रूहानी जज्बों से सुनहरी लफ्जों में, फर्क नहीं रब ने किया बेटी और बेटे में
किवामा खुद को समझो शौहर, भाई, बाप, औरत भी किवामा समझ लीजिये आप
कुरान में लिखी है तौहीदों वाली बात, सूरह निसा की पहली और 32वीं आयत

फ़र्क़ नहीं रब ने किया बेटी और बेटे में

सरताज मेरा, हाँ जी = है मुखिया घर का, हाँ जी
कुछ काम के लाए, हाँ जी = क्या रौब दिखाये, हाँ जी
मैं बीवी उसकी, हाँ जी = मैं मां बच्चों की, हाँ जी
रिश्तों की जड़ में हाँ जी = राहुन क्यों डर के मैं, हाँ जी
ना चले है मर्जी, हाँ जी = कहां दूं मैं अर्जी, हाँ जी

पिदराना सोच लेकर मुश्किल किया है जीना, हर औरत है क़िवामा ये मानो मेरी बहना

फर्क नहीं रब ने किया, बेटी और बेटे में
कमसिन की शादी, हाँ जी = छिन गई आज़ादी, हाँ जी
नाज़ों से पली मैं, हाँ जी = अब्बू की परी मैं, हाँ जी
कैसी मजबूरी, हाँ जी = क्या रीत बेहुदी, हाँ जी
क्या तेरी ख़ुदाई, हाँ जी = सब समझे परायी, हाँ जी
अंजान ये रिश्ते, हाँ जी = रिश्तों की नुमाइश, हाँ जी
मिट गई हर ख्वाहिश, हाँ जी = हर साल मैं टूटी, हाँ जी

पैदा होती बेटी, हाँ जी = कई जतन लगया, हाँ जी
कुछ काम न आया, हाँ जी = होने लगी साजिश, हाँ जी
पैदा हो वारिस, हाँ जी = माँ बाप खसम के, हाँ जी
रिश्ते ये रसम के, हाँ जी, = कोई ना अपना, हाँ जी
क्यों और तड़पना, हाँ जी = हकदार मैं घर की, हाँ जी
क्यूँ सहना इनकी, हाँ जी = दिल से की दुआएँ, हाँ जी
खुली हक की राहें, हाँ जी = हड़ताल शुरू की, हाँ जी
पकवान धुलाई, हाँ जी = पोंछा और सफाई, हाँ जी
बिन पगारी बाई, हाँ जी, = मैं बीवी उसकी, हाँ जी
मैं माँ बच्चों की, हाँ जी = रिश्तों की जड़ में, हाँ जी
रहूं क्यों डर कर मैं, हाँ जी = लिखा सूरह निसा में, हाँ जी
हो मशवरा, मर्जी, हाँ जी = हिकमत और महनत, हाँ जी
मिले दोनो को इज्जत, हाँ जी =
हा तुम भी कवामुन, हाँ जी = हा मैं भी कवामुन, हाँ जी

कुरान से मिला है हिदायत का खजाना, हर रिश्ता हो अहसन का
क्यों झुकना और झुकाना
तेरी कशमकश पे इनायत रब की होये, मसावाती रिश्ते, नसीबों
वाले होये

फर्क नहीं रब ने किया, बेटी और बेटियां मुझे

(लेखिका : जरीना खान)

4 : अब ये ठान लिया हर बेटी ने

अब ये ठान लिया हर बेटी ने, ना हो निकाह जबरन रे
अबू अम्मी फ़र्ज़ समझकर जुल्म ढाये ना
अब ये ठान लिया हर बेटी ने------

मस्ती मेरी शौकियां रूठी, दिल की मनमानियां छुटी
हो गई मैं क्यों जवान
छुटी स्कूल की किताबें, कैद ओ बंदिश की बातें
कोई सुनता कहां
ऐ मौला रे_____
मजहब को ढाल बनाके, करते मनमानियाँ
सूरए निसा की आयत को कोई जाने ना
अब ये ठान _____

शरीयत पर अमल नहीं है, पीसीएम का दखल नहीं है
फ़िक़्ह की ये रीतियाँ
CEDAW संस्था की पुकारें, समझे कब देश ये सारे
मतलब के रहनुमा
ऐ मौला!
बेटी है नूर खुदा का, रोशन इस से जहां .
कुंजियाँ हैं ये बख्शीश की, सभी माने हाँ
अब ये ठान लिया हर बेटी ने----

(लेखिका : जरीना खान)

5 : तोड़-तोड़ के बंधनो को

तोड़-तोड़ के बंधनो को देखो बहने आती है [2]
ओ देखो लोगो, देखो बहने आती है [2]
आएगी ज़ुल्म मिटाएगी, वो तो नया ज़माना लाएगी [2]

तारिकी को तोड़ेगी वो खामोशी को तोड़ेगी [2]
हां मेरी बहनें अब खामोशी को तोड़ेगी [2]
मोहताजी और डर को वो मिलकर पीछे छोड़ेगी [2]
हां, मेरी बहना अब डर को पीछे छोड़ेगी [2]
निडर आज़ाद हो जायेगी, अब वो सिसक सिसक के ना रोयेगी [2]
तोड़-तोड़ के -------

मिलकर लड़ती जाएगी वो आगे बढ़ती जाएगी
हां मेरी बहना अब आगे बढ़ती जाएगी
नाचेगी और गायेगी और फ़नकारी दिखायेगी
हां मेरी बहना अब मिलकर खुशी मनाएगी
गया जमाना पिटने का जी अब गया जमाना मिटने का

तोड़-तोड़ के --------

6 : इस लिए राह संघर्ष की है

इस लिए राह संघर्ष की हम चुने, जिंदगी आंसुओं में नहाई ना हो
शाम सहमी ना हो रात हो ना डरी, भोर की आंख फिर डबडबाई ना हो
इस लिए -----

सूर्य पर बादलों का ना पहरा रहे, रोशनी रोशनाई में डूबी ना हो
यूं न ईमान फुटपाथ पर हो खड़ा, हर समय आत्मा सब की ऊबी न हो
आसमान में टंगी हो ना ख़ुशहालियाँ, क़ैद महलों में सबकी कमाई ना हो
इस लिए ------

कोई अपनी ख़ुशी के लिए गैर की रोटियाँ छीन ले हम नहीं चाहते
छीन कर थोड़ा चारा कोई उमर की हर खुशी छीन ले हम नहीं चाहते
हो किसी के लिए मखमली बिस्तरा, और किसी के लिए एक चटाई न हो
इस लिए ----

अब तमन्नाए फिर ना करे खुदकुशी, ख्वाब पर खौफ की चौकसी ना रहे
श्रम के पांव में हो न पड़ी बेड़ियाँ, शक्ति की पीठ अब ज़्यादती न सहे
दम ना तोड़े कहीं भूख से बचपना, रोटियों के लिए अब लड़ाई ना हो

इस लिए ------

बह रहा है लहू बेकरसूरों का क्यों, जल रही बस्तियां फिर गरीबों की क्यों
धर्म के नाम पर हो रहे क़त्ल क्यों, जल रहा देश नफ़रत की आग में क्यों
फिर कहीं खून सस्ता ना हो गैर का, धर्म के नाम पर अब लड़ाई ना हो
इस लिए ------

जिस्म से अब न लिपटें उठें आग की, फिर कहीं भी न कोई सुहागन जले
न्याय पैसे के बदले ना बिकता रहे, कातिलों का मनोबल ना फुले-फले
कतल सपने ना होते रहें इस तरह, अरथियों में दुल्हन की विदाई ना हो
इस लिए --------

7 : **जिंदगी अपनी सजायेंगे**

मिलकर हम नाचेंगे गाएंगे, मिलकर हम खुशियां मनाएंगे
जिंदगी अपनी सजायेंगे (2)

चिड़ियों से हम चहक ले आएंगे, महक हम फूलों से लाएंगे
चहकते महकते जायेंगे

चुस्ती हम शेरनी से लाएंगे, फुर्ती हम हिरनी से लाएंगे
शक्ति हम फिर से बन जायेंगे

मौजों से हम मस्ती ले आएंगे, पर्वत से हम हस्ती बनाएंगे
आलम हम खुशियों का लाएंगे

जम के हम चिंखे चिल्लाएंगे, जुल्मोन को हम जड़ से मिटाएंगे
सोतों को हम जाके जगायेंगे

दायरे हम अपने बढ़ाएँगे, कायदे हम अपना बनाएँगे
बहुतों को हम समझे समझायेंगे
गीत हम दोस्ती के गाएँगे

{नेपाली लोकगीत के धुन पर}

8 : **बी एम एम ए तराना**

अपने हक के खातिर हम को दुनिया से टकराना है, मिलकर कदम बढ़ाना है (2)
दुनिया की सभी दिशाओं से, शहरों से हर एक गाँव से (2)
गिरजों से गुरुद्वारों से, मस्जिद और शिवलों से अब ये आवाज उठाना है
मिलकर कदम बढ़ाना है (4)

भूख से रोते बच्चों को, मासूमों और मजलूमों को
लाचार भटकते बूढ़ों को, सारे बेकार जवानों को अब इनका हक दिलवाना है
मिलकर कदम बढ़ाना है (4)

ये दुनिया कुछ खुदगर्ज भी है, तुम से ये हमारी अर्ज भी है (2)
बस हक नहीं कुछ फ़र्ज़ भी है, तुम पर धरती का कर्ज़ भी है,
तुम को ये कर्ज़ चुकाना है
मिलकर क़दम बढ़ाना है (4)

मुल्ला भी उठे, मुफ़्ती भी उठे, हाफ़िज़ भी उठे, आलिम भी उठे
है वक़्त की आज पुकार यही, मज़लूम उठे, मजबूर उठे
मायुस दिलों को जगाना है

मिलकर क़दम बढ़ाना है (4)
नफ़रत की दीवारों को, धर्म के ठेकेदारों को
सारे सरमायादारों को, जो भ्रष्ट है उन सरकारों को
अब हम को सबक सिखाना है
मिलकर क़दम बढ़ाना है (4)

हक की खातिर लड़ना होगा, अपनी ज़िद पर अड़ना होगा
मिलकर आगे बढ़ना होगा, सब को लिखना पढ़ना होगा, सब को इन्साफ दिलाना है
मिलकर क़दम बढ़ाना है (4)

हर नर का, हर एक नारी का, ये फ़र्ज़ है दुनियादारी का
रोना छोड़ो लाचारी का, है वक्त यही बेदारी का
एक इंकलाब लाना है
मिल कर क़दम बढ़ाना है (4)

घुंघट पर्दे का चलन ना हो, ज़िंदों के तन पर कफन ना हो
बेबस माँ-बेटी-बहन ना हो, आशाओं का अब दमन ना हो

ऐसा माहोल बनाना है
मिलकर क़दम बढ़ाना है (4)

9 : **बेटी हूं मैं बेटी**

बेटी हूं मैं बेटी, मैं तारा बनूंगी
तारा बनूंगी मैं सहारा बनूंगी
बेटी हूं मैं बेटी, मैं तारा बनूंगी

गगन पे चमके चंदा
मैं धरती पर चमकूंगी
धरती पर चमकूंगी मैं उजियारा करूंगी
बेटी हूं मैं बेटी मैं तारा बनूंगी

पढ़ूंगी लिखूंगी मैं मेहनत भी करूंगी
अपने पांव चल कर दुनिया को देखूंगी
दुनिया को देखूंगी मैं दुनिया को समझूंगी
बेटी हूं मैं बेटी मैं तारा बनूंगी
मैं तारा बनुगी -------

10 : मेरी प्यारी माँ

माँ से है सारी दुनिया, बिन माँ किस काम की दुनिया
उस्ताद से पहले बना रुतबा उसका
अल्लाह ने खुद है उतारा, जन्नत मिलने का इशारा
ज़िम्मा हर एक काम का लेते देखा
मेरी प्यारी माँ, प्यार लुटाती माँ, कुदरत की नियामत है मेरी माँ, हो, हो, हो [2]

बिन माँ हर काम अधूरा, पर श्रेय नहीं मिलता पूरा,
अब्बू के ज़ुल्म अम्मी सहे, बचपन से देखा
छोटी सी गलती होती है, डर डर के वो चुप रहती है
अब्बू मेरे खुद को समझे, हिकमत वाला
मेरी प्यारी माँ --------

घर आई बन के रानी, अब सब की नौकरानी
मर्जी नहीं चलती कहीं, बचपन से देखा
कपड़े घर भर के धोती, घस घस बरतन चमकाती
Duty समझ हर काम को करते देखा
अब्बू का गुस्सा ऐसा, खर्ची को ना दे पैसा
मजबूर और बेबस दिखे उस की नजरें
ना जान की परवाह करती, बच्चों को पैदा करती

समानता के नाम पे, लुटते देखा
जननी है हर माँ, हर दौर की रचना माँ
चुप क्यों रहती बोलो तुम भी माँ
हां, हां, हां, मेरी प्यारी मां

अपना है ये मंसूबा, जब लाऊंगा महबूबा
इज्जत का, इन्साफ का बने रिश्ता

बहनों को खूब पढ़ाऊं, तौहीद को मैं अपनाऊं
इल्मो-हुनर इंसान को मिले यक्सा

====मेरी प्यारी माँ------

(लेखिका : जरीना खान)

11 : चाहूँ ऐसा आशियाना

चाहूं मैं तो ऐसा जहां, चाहूं ऐसा आशियाना
बेख़ौफ़ हो मेरी दुनिया, जीना हो यहाँ आसां
जहां हंस दूं खिलखिलाके, कोई टोकने न आए
आवाज़ हो बुलंद गर, कोई आँखें ना दिखाये
पाबंदिया ना मुझ पे, पढ़ने की और परदे की
कायनात ये खुदा की, कोई अपनी ना चलाये
या रब तेरी तौहीद को, जब से समझा और जाना
चाहूँ मैं तो ऐसा जहाँ, चाहूँ ऐसा आशियाना

मेरी रब से ये दुआ है, वो दिन कभी तो आये
बेटी को समझे बेटी, बेटा सा ना कहलाये
मुझे जरा निहारो, इन्साफ और अक्ल से
रब ने मुझे बनाया, अहसन भरे अमल से
मेरी राहें रोशन बनी, शर्या को समझा और जाना
चाहूँ मैं तो ऐसा जहाँ, चाहूँ ऐसा आशियाना
बेख़ौफ़ हो मेरी दुनिया, जीना हो जहाँ आसां

(लेखिका : जरीना खान)

12 : तौहीद फ़ैलाना काम है

मेरा खुदा अजीम है रहीम है
मुझे खुदा की ज़ात पर यकीन है
हमीं बनेंगे वली और खलीफा
तौहीद फ़ैलाना काम है
मेरा खुदा अजीम है रहीम है

हो तुम्हारे सामने जुल्मों सितम
शैतान की तरह बने जो बरहम (2)
सूरह बकर की आयतों में है लिखा
खलीफा बन के सिखाएंगे सलिखा
किसी को हो ना हो हमें तो ऐतबार
तौहीद फ़ैलाना काम है .....
हमने समझा शरिया को कुरान से
कुरान के लिखे को माने शान से
हर एक शय में मेरे रब का अक्स दिखे
अदल से जुड़ कर अपनी राह खुद चुने
बनाइ कितनी प्यारी सारी कायनात
तौहीद फ़ैलाना काम है
मेरा खुदा अज़ीम है ----
तौहीद फेलाना काम है [4]

(लेखिका : जरीना खान)

13 : इरादे कर बुलंद

इरादा कर बुलन्द रहना शुरू करती तो अच्छा था
तू सहना छोड़ कर कहना शुरू करती तो अच्छा था

सदा औरों को ख़ुश रखना बहुत ही ख़ूब है लेकिन,
ख़ुशी थोड़ी तू अपने को भी दे पाती तो अच्छा था

दुखों को मान किस्मत हार कर रहने से क्या होगा
तू आँसू पोंछकर अब मुस्कुरा लेती तो अच्छा था

ये पीला रंग ये लब सुखे, सदा चेहरे पे मायुसी
तू अपनी एक नई सूरत बना लेती तो अच्छा था

तेरी आंखों में आंसू है तेरे सीने में है शोले
तू इन शोलों में अपना गम जला लेति तो अच्छा था

हर सर पर बोझ जुल्मों का तेरी आँखें सदा नीची
कभी आंखें उठा तेवर दिखा देती तो अच्छा था

बनाए आशियां कितने मगर बेघर अभी भी तू
कुर्बानी छोड़ कर घर अपना बना लेती तो अच्छा था

अँधेरों में पली उनको नसीबे जिंदगी जाना
कभी ख्वाबे सहर तू भी सजा लेती तो अच्छा था

तेरे माथे पे ये आंचल बहुत ही खूब है लेकिन
दिखा देती तू इस आंचल का एक परचम बना लेती तो अच्छा था

14 : चले चलो दिलों में घाव

- चले चलो दिलों में घाव, लेके भी चले चलो,
चलो लहु लुहान पाव, लेके भी चले चलो,
चलो के आज साथ-साथ, चलने की ज़रूरतें
चलो के ख़तम हो ना जाये, ज़िन्दगी की हसरतें
- ज़मीन, ख़्वाब, ज़िंदगी, यकीन - सबको बांटकर।
वो चाहता है बेबसी में आदमी झुकाएं सर,
वो चाहता है जिंदगी हो रोशनी से बेखबर,
वो एक एक करके अब जला रहे हैं हर शहर,
जले हुए घरों के ख्वाब लेके भी चले चलो
चले चलो दिलों में घाव, लेके भी चले चलो
- वो चाहते हैं बंटना दिलों के सारे वलवले
वो चाहते है बांटना ये जिंदगी के काफिले
वो चाहते है ख़तम हो उम्मीद के ये सिलसिले
वो चाहते है गिर सके ना लूट के ये सब किले
सवाल ही है अब जवाब ले के भी चले चलो
- वो चाहते हैं जातियों की, बोलियों की फूट हो
वो चाहते है धर्म को तबाहियों की छूट हो
वो चाहते है जिंदगी ये हो फरेब झूठ हो
वो चाहते है जिस तरह भी हो मगर ये लूट हो
सिरों पे जो बची है छांव ले के भी चले चलो
चले चलो दिलों में घाव लेके भी चले चलो

15 : जी ना पाऐंगे

जी ना पाऐंगे हम खुद को गँवाई के
जी ना पाऐंगे हम खुद को रुलाई के

इन अंखियों में है प्यार की मंशा
जी ना पाऐंगे बिना प्यार पाइके

इन अँखियों में है सपनों का डेरा
जी ना पाऐंगे हम सपने लुटाईके की

इन अखियों में है अपनों का डेरा
जी ना पाऐंगे हम अपने भुलाई के

इन अखियों में है सखियों का डेरा
जी ना पाऐंगे हम सखिया भुलाई के

मन अपने में है ज्ञान की मंशा
जी ना पायेंगे बिना ज्ञान पाईके

मन अपने में है मन की मंशा
जी ना पाऐंगे हम इज्जत गवाई के

Bhartiya Muslim Mahila Andolan
BMMA